सार्वभौमिक शिक्षक – क्यों, कौन, कैसे?

अमित कुमार दवे*
पूनम दवे**

प्रस्तुत आलेख ''सार्वभौमिक शिक्षक – क्यों, कौन, केसे?'' के माध्यम से लेखक डॉ. दवे ने सार्वभौमिकरण के पर्यायों को प्रस्तुत करते हुए सार्वभौमिकरण में विविध सन्दर्भों की प्रयुक्ति पर प्रकाश डाला है। साथ ही शिक्षा के वैश्विक भविष्य पर दृष्टिपात करते हुए सार्वभौमिक शिक्षकों की आवश्यकता को संदर्भित किया है। तत्पश्चात् लेखक ने स्वीकार्य संस्कृति निर्माता, विवेकी, शैक्षिक पर्यावरण व मूल्य संवर्द्धनकारी, नवीन पीढ़ी को ऊर्जान्वितकर्त्ता विवेक सम्मत विचारधारा के हिमायक के रूप में सार्वभौमिक शिक्षक को निरूपित करने के प्रयास के साथ अध्यापक शिक्षकों को उक्तवत् शिक्षक तैयार करने हेतु कुछ बिंदुओं को प्रस्तुत आलेख के माध्यम से उल्लेखित करने का प्रयास किया है।

सार्वभौमिकरण का अर्थ

सार्वभौमिकरण शब्द वैश्विकीकरण अंतर्राष्ट्रीयकरण, भूमण्डलीकरण, ग्लोबलाइजेशन के रूप में भी प्रयुक्त किया जाता है। सार्वभौमिकरण शब्द अपने में वैश्विक विविध सन्दर्भों, विचारों, विवरणों, निष्कर्षों, व्यवहारों, विमर्शों एवं विकास को समाहित किए हुए है। सार्वभौमिकरण शब्द अंतर्राष्ट्रीयकरण की तुलना में नवीन विशेषताओं को अपने में समाहित किए हुए है। सार्वभौमिकरण में अवस्था परिवर्तन एवं पुनर्मूल्यीकरण, विश्व में फैली विविध वास्तविकताओं एवं कारणों का निर्माण, सामाजिक घटनाओं में अन्तर का संदर्भीकरण, वैश्विक विकास के नवआयाम एवं विविध दृष्टिकोणों के साथ वैश्विक संवादादि विषय प्रमुख रूप से समाहित हैं। इसी सार्वभौमिकरण के अंतर्गत एक तथ्य उभरकर आता है कि समग्र विश्व के एक

* *सहायक आचार्य*, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जनार्दन राय नगर, राजस्थान
** *सहायक आचार्य*, विद्यापीठ विश्वविद्यालय, डबोक 313022, उदयपुर, राजस्थान

भावी ग्राम के रूप में परिवर्तन के दरम्यान शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका शैक्षिक वैश्विक पटल पर उभरेगी, तब सार्वभौमिक शिक्षण व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षक क्यों आवश्यक होंगे, सार्वभौमिक शिक्षक कौन होंगे व केसे निर्मित होंगे? विषय पर दृष्टिपात करने का प्रयास प्रस्तुत पत्र ''सार्वभौमिक शिक्षक – क्यों, कौन, कैसे?'' के माध्यम से किया गया है।

सार्वभौमिक शिक्षक क्यों?

21वीं सदी के आरंभ से ही वैश्विक शिक्षक समुदाय के समक्ष एक नवीन चुनौती प्रस्तुत हुई है, वह है ''शिक्षा का वैश्विक भविष्य''। जिस द्रुत गति से विश्व विकास को प्राप्त कर रहा है, उस द्रुत गति से हमारी शिक्षा व्यवस्था विशेष रूप से अध्यापक शिक्षा व्यवस्था विकसित होती नजर आ रही है? इस प्रश्न पर आप और हम अध्यापक शिक्षकों को गहराई के साथ तार्किक अन्वेषणात्मक चिन्तन करना चाहिए कि क्या हमारे द्वारा निर्मित किए जा रहे शिक्षक सार्वभौमिक शिक्षक के रूप में अपने आपको विश्व हेतु प्रस्तुत करने में समर्थ हो पा रहे हैं? सम्प्रति निर्मित शिक्षक क्या वैश्विक दृष्टिकोण अपने ज़हन में उतारने में समर्थ हो पा रहे हैं? वर्तमान में स्थापित अथवा हमारे द्वारा निर्मित शिक्षक डॉ. राधाकृष्णन, गिजूभाई, मारिया मॉण्टेसरी आदि विश्व के महानतम शिक्षकों के समकक्ष अथवा आस पास की भी परिचयात्मक क्षमता रखते हैं?

- आज के प्रचलित शिक्षक जिनका वैश्विक शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान हो?
- वे शिक्षक जो अपने को व अपने शिक्षण व्यवसाय को वैश्विक दृष्टि से देखते हों?
- वैसे शिक्षक जिनके मूल्य, आदर्श, व्यवहार व सोच विश्व समाज के लिए अनुकरणीय हो?
- बालक में विश्व नागरिकता की स्वधारणा का बोध कराने की व्यवस्था करने वाले शिक्षक?
- ऐसे शिक्षक जो अपने शिक्षण को व्यवसाय न मानते हों अपितु सामाजिक कर्त्तव्य मानते हों?

उक्त प्रश्न आज वैश्विक समाज के निर्माण में शिक्षा क्षेत्र के शैक्षिक समाज हेतु अनसुलझे प्रश्न बन चुके हैं। उक्त प्रश्नों का यदि समाधान मिल जाता है तो आज का शिक्षक अपने आपको सार्वभौमिक शिक्षक के रूप में स्थापित करने में समर्थ है, किन्तु उक्त प्रश्नों का सटीक समाधान यदि प्राप्त नहीं हो पाता है तो उक्त प्रश्नों के वैश्विक दृष्टि से सकारात्मक एवं विश्लेषणात्मक उत्तरों को देने वाले शिक्षकों का निर्माण करने के लिए सार्वभौमिक शिक्षक सम्प्रति आवश्यक है, जो अगली सदी को एक सार्वभौमिक शैक्षिक समाज में बाँधने में समर्थ हो सकें।

साथ ही वैश्विक विकास की शृंखला में शैक्षणिक विकास को भी सार्वभौमिक कदमताल करवाने में समर्थ हो। यदि उक्त समस्याओं के समाधानात्मक हल मिल जाएँ तो हमारा सार्वभौमिक शिक्षक संपूर्ण वैश्विक

शैक्षिक अवस्था में परिवर्तन के रूप में स्थापित हो पुनर्मूल्यीकरण करवाने में समर्थ हो सकता है। साथ ही विश्व में फैली वास्तविकताओं, सूचनाओं एवं संदर्भों को वैश्विक पटल पर प्रस्तुत कर सत्य के सद्प्रचार हेतु सार्वभौमिक शिक्षक आवश्यक है। पृथक-पृथक वैश्विक परिदृश्य पर हो रहे बदलावों एवं विकास में से सकारात्मक पहलू का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर विषय-वस्तु के वैश्विक पटल पर प्रसारण एवं स्थापन हेतु सार्वभौमिकी नेतृत्वकर्त्ता शिक्षकों की महती आवश्यकता है।

सार्वभौमिक शिक्षक कौन

सार्वभौमिकरण के इस युग में कोई भी व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र अपने तक ही सीमित नहीं रहे, उस स्थिति में शिक्षक एक नवीन चुनौती के रूप में विश्व पटल पर आता है क्योंकि विश्व को एक भावी ग्राम के रूप में स्थापित करने एवं सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक दूरियों को पाटने का कार्य करने में शिक्षक समुदाय ही समर्थ है। किन्तु वैश्विक संगठन की स्थापना कर सार्वभौमिक सोच, दृष्टि एवं विकास की राह पर विश्व ग्राम को चालित करने वाला शिक्षक कौन हो सकता है, जो सार्वभौमिक शिक्षक की पदवी से अलंकृत हो।

सार्वभौमिक (वैश्विक) ग्राम के स्थापन हेतु सार्वभौमिक शिक्षक की संज्ञा से वे शिक्षक संज्ञित हो सकते हैं जो –

- एक नव वैश्विक संस्कृति जो सर्व स्वीकार्य हो, की स्थापना करने में समर्थ हों।
- नवीन शैक्षिक पर्यावरण का निर्माण करने में समर्थ हो जो वैश्विक ग्राम द्वारा अनुकरणीय हों।
- जो अवस्था परिवर्तन के संदर्भ में नवीन मूल्यों की स्थापना करने में समर्थ हों।
- विश्व में प्रचलित तथ्यों, सूचनाओं, विश्लेषणात्मक शोधों के निष्कर्षों को अंगीकार कर निर्माण कार्य में संलग्न हों।
- सार्वभौमिकरण के अंतर्गत केवल आधुनिकीकरण की संकल्पना के स्थापन के स्थान पर परम्परागत व पाश्चात्य विचारों, विमर्शों एवं तथ्यों की स्थापना करवाने में समर्थ हों।
- नव पीढ़ी को श्रम के प्रति निष्ठावान बनाने में समर्थ हों।
- नव पीढ़ी को थोथे तथ्य व मान्यताएँ थोपने के स्थान पर विवेक सम्मत विचारों के आधार पर स्वीकार्य को ही स्वीकारने की क्षमता उत्पन्न करने वाले हों।
- वैश्विक बालक में विवेक की जागृति करने वाला हो।
- तकनीकी व सूचना संचार के माध्यम से स्वयं अपनी जानकारियों के साथ अपने बच्चों की जानकारियों को भी नवीनतम करने वाला हो।
- केवल तकनीकी ही नहीं अपितु वास्तविक जीवन संग्राम में खरे उतरने की सीख देने वाला हो।
- अनुभव जनित ज्ञान करवाने का अभ्यस्त हो एवं नवीन ज्ञान प्रदान करने के आधार

के रूप में क्रियात्मक आधार का चयन कर प्रयोग करने वाला हो।

- छात्र को सार्वभौमिक परिचय प्राप्ति के लिए प्रेरित कर भीड़ का हिस्सा बनने के स्थान पर नवीन मार्ग तलाशने पर ज़ोर देने वाला हो।
- विश्व ज्ञान भंडार का पीपासु हो और अर्जित ज्ञान को विश्व में प्रसारित करने वाला हो।
- आत्मा व विवेक के आधार पर नवीन का चयन करने वाला एवं करवाने वाला हो। साथ ही वैश्विक ज्ञान भंडार का विकास करने में सामर्थ्य रखने वाला हो।
- विश्व व स्थानीय जनसमुदायों एवं अपने छात्रों में पारस्परिक संवादों को बढ़ावा देने के साथ नवीन विकास, नवीन व्यवहार व नवीन सोच को जन्म देने में समर्थ हो।
- विश्व नागरिकता की स्वधारणा का बोध कराते हुए स्थानीय मसलों की शिक्षा देने वाला हो।
- विश्वबन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत ''विश्वव्यापी शांतिपूर्ण संस्कृति'' के विकास में सहायक हो।

साथ ही सम्प्रति सार्वभौमिक शिक्षक वह हो सकता है जो नव पीढ़ी अथवा समाज को, वैश्विक ग्राम को मद्देनजर रखते हुए मानवाधिकार शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा, आपदा प्रबंधन, शान्ति शिक्षा, नैतिक शिक्षा, वैश्विक शिक्षा, अन्तर्सांस्कृतिक शिक्षा, पोषण शिक्षा, जीवन कला, विवेक जागृति के साथ विविध वैश्विक आयामों का उद्घाटन करने में समर्थ हो।

सार्वभौमिक शिक्षक कैसे

सार्वभौमिक परिवेश में यदि हमें वैश्विक दृष्टिकोण से युक्त शिक्षक विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करने हैं, तो हम शिक्षक-शिक्षकों को नवदृष्टि से युक्त होना पड़ेगा। शिक्षा नियन्ताओं एवं नीति निर्माताओं को नव सोच, नव व्यवहार एवं नव परिणामों की प्राप्ति की पिपासा से युक्त होना पड़ेगा।

सम्प्रति शिक्षक-शिक्षा महाविद्यालयों के माध्यम से निर्मित होते शिक्षकों की स्थिति को देख ऐसा नहीं लगता कि ये शिक्षक वैश्विक ग्राम के रूप में कुछ होने भी देंगे?

सम्प्रति यदि हम शिक्षकों को सार्वभौमिक पदवी से युक्त करना चाहते हैं तो सर्वप्रथम हमें कमर कसनी होगी। यदि आप और हम शिक्षा चिन्तक ठान लें कि परिवर्तन करके रहेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हमारे द्वारा तराशा गया शिक्षक वैश्विक संदर्भ में अपना महत्वपूर्ण हस्तक्षेप रखने में समर्थ होगा। किन्तु विडम्बना है प्रयासों की एवं कृत संकल्प होने की। आप और हम नव शिक्षण पीढ़ी को कुछ इस प्रकार तैयार करें कि वे नव वैश्विक दृष्टि से युक्त हों, इस हेतु निम्न प्रयास किए जा सकते हैं –

- नव शिक्षक को औपचारिक शिक्षक पद प्राप्ति की धारणा से शिक्षक पेशे से संबंधित सकारात्मकताओं से युक्त किया जाए।

- शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम का नवीनीकरण कर सैकेंडरी के पश्चात् ही शिक्षा विषय की व्यवस्था कर अन्य डॉक्टर, इंजीनियर के समान शिक्षक पेशे को भी विशिष्ट दर्ज़ा प्रदान किया जाए।
- शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों हेतु मानक मजबूत किए जाएँ।
- शिक्षक विश्वविद्यालय की स्थापना दर राज्य में अनिवार्यत: की जाए।
- निर्मित किए जाने वाले शिक्षकों को अनिवार्यत: तकनीकी व सूचना प्रौद्योगिकी से युक्त किया जाए।
- नव शिक्षकों को परम्परागत् ज्ञान के प्रति आकर्षित किया जाए एवं विवेक सम्मत स्वीकार कर नवीन ज्ञान के साथ तालमेल करवाते हुए इस वैश्विक प्रसारण हेतु प्रेरित किया जाए।
- नवीन तकनीकी व नवीन विधियों के माध्यम से शिक्षण करने हेतु प्रेरित किया जाए साथ ही अनुभव एवं क्रियाधारित सीखने-सिखाने हेतु प्रेरित किया जाए।
- शिक्षक की पहचान निर्माण हेतु विशिष्ट प्रयास समेकित रूप से किए जाएँ।
- शिक्षक में यह भाव जागृत किए जाएँ कि –
  - मैं कौन हूँ?
  - मेरा आदि-अन्त क्या है?
  - मेरा जन्म क्यों हुआ है?
  - मैं क्या कर रहा हूँ?
  - मुझे क्या करना है?
  - मेरा लक्ष्य क्या है?

उक्त प्रश्नों के समाधान एक सार्वभौमिक ग्राम को ध्यान में रखते हुए सार्वभौमिक शिक्षक के रूप में तलाशने के प्रयास किए जाएँ एवं अपने आपको वैश्विक पटल पर स्थापित करने हेतु अतिरिक्त प्रयास किए जाएँ एवं करवाए जाएँ।

- भयमुक्त हो स्वयं के साथ वैश्विक अस्तित्व को कायम रखने के भावों की जागृति की जाए। असहिष्णुता के स्थान पर परम्परागत व नवीन के मध्य तालमेल स्थापन के प्रयास किए जाएँ।
- अपनी संस्कृति, धर्म, विचार, साहित्य, परंपराओं के प्रति समझ मजबूत की जाए ताकि जुड़ाव व विस्तार को स्थान मिल सके।
- नव शिक्षकों में विविध संस्कृतियों, धर्मों-विचारों के प्रति सम्मान के भाव जागृत करें व विविधता में एकता के भावों की स्थापना करें तो सार्वभौमिकरण के लाभों से विश्व समाज लाभान्वित हो सकेगा।
- शिक्षकों को विविध संस्कृतियों, धर्मों, राष्ट्रों, साहित्यों के मध्य संवाददाता के रूप में सेतु के रूप निर्मित करें तो निश्चित ही सार्वभौमिकरण सुफलदायी एवं विश्वग्राम को एक सोच एक व्यवहार, एक दृष्टि से नव आयाम प्रस्तुत करने के अवसर प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकेगा।

संदर्भ

ओशो. 1968. *शिक्षा में क्रान्ति*, ओशो मीडिया इंटरनेशनल, 17 कोरेगाउन पार्क, पुणे, भारत

खेमका, राधेश्याम. 1988. *कल्याण* – शिक्षांक गोविन्द भवन, गीता प्रेस, गोरखपुर

विजय, लक्ष्मी. 2011. *वैश्वीकरण का वैदिक दृष्टिकोण*, शोध आलेख, वेद विद्या मूल्यांकित शोध पत्रिका में प्रकाशित, षोड़षांक, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, पृ.सं. 70–78

शार्टनर, बी.टी. 2009. *वैश्वीकरण एवं अध्यापक शिक्षा प्रसार वार्ता*, ग्रेज विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया